इकाई 32 संयुक्त मोर्चा

इकाई की रूपरेखा

32.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- यह जान पायेंगे कि चीन में संयुक्त मोर्चे का विचार क्यों बना,
- संयुक्त मोर्चे के गठन के लिये उत्तरदायी कारकों को समझ सकेंगे,
- संयुक्त मोर्चे के दौर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे,
- यह जान सकेंगे कि क्वोमिनतांग चीनी राष्ट्रीय आंदोलन में किस प्रकार एक मजबूत सामाजिक शक्ति के रूप में उभरा, और
- संयुक्त मोर्चे की उपलब्धियों और असफलताओं के विषय में जान सकेंगे।

32.1 प्रस्तावना

''संयुक्त मोर्चे'' का शाब्दिक अर्थ होता है गठबंधन। कम्युनिस्ट शब्दावली में उसका प्रयोग उस रणनीति के लिये किया जाता है जहाँ कम्युनिस्ट पार्टी किसी समान उद्देश्य के लिये अथवा किसी समान शत्रु के विरुद्ध दूसरे राजनीतिक दलों अथवा समूहों के साथ गठबंधन कर लेती है। कम्युनिस्ट पार्टियों ने इस रणनीति का प्रयोग तब-तब किया है जब-जब उन्हें लगा है कि वे अकेले अपने बूते पर संघर्ष को आगे नहीं बढ़ा सकते और दूसरे ऐसे समूह अथवा दल हैं जो उनके समूचे कार्यक्रम से सहमत न होते हुए भी उनके कुछ ऐसे उद्देश्यों से सहमति रखते हैं जो कहीं अधिक आसन्न है। इस तरह, संयुक्त मोर्चे का आधार एक समान न्यूनतम कार्यक्रम होता है। फिर भी, किसी ''संयुक्त मोर्चे'' का अर्थ कम्युनिस्ट पार्टियों का दूसरे समूहों के साथ विलय हो जाना नहीं होता। इसका कारण यह है कि उनके कुछ व्यापकतर लक्ष्य भिन्न होते हैं। वे यह मानते हैं कि उनके आसन्न लक्ष्य पूरे हो जाने के बाद, हो सकता है दूसरे समूह (अथवा, गुट) और आगे संघर्ष न चलाना चाहें। वास्तव में तो यह भी हो सकता है कि वे एक-दूसरे से ही लड़ चलें। संयुक्त मोर्चे का उद्देश्य समान संघर्षों के दौरान जनता के बीच अपना स्वाधीन प्रभाव कायम करना भी होता है। इसका कारण यह है कि न्यूनतम समान लक्ष्य पूरे होने के बाद जनता उनके प्रभाव में बनी रहेगी और अधिक व्यापक लक्ष्यों के लिये संघर्ष को जारी रखना चाहेगी।

चीन में पहला संयुक्त मोर्चा 1924-1927 के दौर में रहा । इस दौर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने क्वोमिनतांग के साथ मिल कर एक संयुक्त मोर्चे का गठन किया जिसका उद्देश्य :

- साम्राज्यवादी पश्चिमी ताकतों और जापान द्वारा निरूपित उपनिवेशवाद, और
- चीन के युद्ध नेताओं द्वारा निरूपित सामंतवाद का अंत करना था ।

इस तरह, चीन में 1924 से 1927 तक संयुक्त मोर्चे की रणनीति के समान ध्येय थे राष्ट्रीय मुक्ति और चीन में एक जनतांत्रिक सामाजिक और राजनीतिक ढांचे की स्थापना ।

यह संयुक्त मोर्चा 1927 तक ही चल पाया । इसका अंत कम्युनिस्टों और मज़दूर वर्ग के विरुद्ध दमन के साथ हुआ । इस बार दमन (1923 की तरह) केवल युद्ध सामंतों ने नहीं किया, बल्कि उसके अपने पूर्ववर्ती मित्र क्वोमिनतांग ने किया, और इसमें उसकी सहायता चीन में विद्यमान साम्राज्यवादी शक्तियों और युद्ध सामंतों ने की ।

इस इकाई में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे :

- सबसे पहले, संयुक्त मोर्चे की नीति बनने के कारण, अर्थात् चीन में ऐसी कौन-सी स्थितियां थीं जिनके कारण क्वोमिनतांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दोनों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करने का निर्णय लेना पड़ा,
- दूसरे, वे अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव जिन्होंने इस नीति को आकार दिया, संयुक्त मोर्चे की प्रकृति और उसकी उपलब्धियां,
- तीसरे, संयुक्त मोर्चे की रणनीति और चीन में मज़दूर और किसान आंदोलनों की प्रगति के बीच संबंध, राष्ट्रीय शक्तियों और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की उपलब्धियां, और
- अंत में, संयुक्त मोर्चे के कारण और चीनी क्रांतिकारी आंदोलन के भीतर की समस्याएं और उसके अंतर्विरोध ।

इसके अतिरिक्त, इस इकाई में यह भी चर्चा की जायेगी कि इस प्रयोग से कौन सी समस्याएं उठीं, और चीनी क्रांतिकारी नेताओं ने उन समस्याओं का किस प्रकार समाधान किया ।

32.2 संयुक्त मोर्चे का गठन

चीन में संयुक्त मोर्चे का गठन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में विश्व की सभी कम्युनिस्ट पार्टियों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन कम्युनिस्ट इंटरनेशनल, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और क्वोमिनतांग की पहल पर हुआ । इसके गठन के कारण आंशिक रूप से वैचारिक और आंशिक रूप से व्यावहारिक थे । जैसा कि आप इकाई 31 में पढ़ चुके हैं, प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् के वर्षों में निम्नलिखित तथ्य देखने में आये :

- चीन में सोवियत रूस के लिये अत्यधिक सहानुभूति का बनना,
- चीनी बुद्धिजीवी वर्ग का आमूल परिवर्तन, और
- मज़दूर और किसान आंदोलनों और मार्क्सवाद का उदय ।

पश्चिमी ताकतों से पूर्ण मोह भंग की स्थिति थी । सोवियत संघ के कम्युनिस्टों ने तमाम विशेषाधिकारों और प्रादेशिक क्षेत्रों पर दावों को छोड़ने में पहल की थी । इनमें चीन में पूर्ववर्ती ज़ार शासन के नियंत्रण वाला मंचूरियाई रेलमार्ग भी था । इसलिये, यह स्वाभाविक था कि चीन के प्रमुख राजनीतिक गुट सोवियत सरकार और वहां की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मैत्री संबंध स्थापित करते ।

इसलिये, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त, क्वोमिनतांग ने भी सोवियत संघ के साथ सीधे और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये

इसके [illegible] सरकार, वहां की कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का दृढ़ मत था कि [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी ही नहीं, बल्कि क्वोमिनतांग भी एक प्रगतिशील और क्रांतिकारी राजनीतिक [illegible] यह समझ इस विश्लेषण पर आधारित थी कि राष्ट्रीय मुक्ति के लिये संघर्ष कर रही उपनिवेशी

और अर्ध-उपनिवेशी देशों की तमाम राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों को विश्व की राजनीति में एक सकारात्मक भूमिका निभानी थी। वे यह मानते थे कि साम्राज्यवाद के विरोध में खड़े होने वाले तमाम राजनीतिक गुट नवोदित समाजवादी देश रूस के समान शत्रु के विरुद्ध विश्व व्यापी संघर्ष में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। इन गुटों में शेष यूरोप के मज़दूर और कम्युनिस्ट आंदोलन, और भारत और चीन जैसे उपनिवेशी और अर्ध-उपनिवेशी देशों के मज़दूर और कम्युनिस्ट आंदोलन शामिल थे। इसलिये, सोवियतों और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के मन में यह एक आदर्श स्थिति थी कि वे अवसर मिलते ही समान शत्रु के विरुद्ध आपस में सहयोग करें।

मार्क्सवाद के विचारों पर आधारित कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का भी दूसरे देशों में क्रांतियों को बढ़ावा देने में लाभ था, क्योंकि ये क्रांतियां आवश्यक रूप से चीन अथवा भारत की जनता के एक बड़े वर्ग के हितों का वहां के निहित स्वार्थों के हितों के विरुद्ध प्रतिनिधित्व करती। चीन में उन्होंने देखा कि केवल मज़दूर और किसान ही नहीं बल्कि बूर्जुआ और मध्यम वर्ग भी युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध थे। वहां युद्ध सामंतवाद का यह विरोध इसलिये था क्योंकि युद्ध सामंत चीन में सामंतवाद का मुख्य आधार थे। उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव न केवल किसानों के हितों के विरुद्ध ज़मीदारों के हितों का प्रतिनिधित्व करता था, बल्कि यह चीन में आधुनिकीकरण और पूंजीवाद के विकास में भी बाधक था। बूर्जुआ वर्ग के हित आधुनिक चीन के विकास में निहित थे, इसलिये ये युद्ध सामंतों के विरुद्ध थे। उनके हितों का प्रतिनिधि युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वाला क्वोमिनतांग था। चीनी बूर्जुआ वर्ग के स्वार्थ साम्राज्यवाद का विरोध करने में भी निहित थे क्योंकि साम्राज्यवाद भी चीन में उन्नत पूंजीवाद के विकास में बाधक था। पश्चिमी ताकतें सारे लाभ खींच ले जाती थीं और चीनी बूर्जुआ उनसे होड़ करने की स्थिति में नहीं थे। इसलिये क्वोमिनतांग ने पश्चिमी ताकतों का विरोध किया (देखिये इकाई-30)।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने भी इस स्थिति को महसूस किया, और उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त क्वोमिनतांग के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। क्वोमिनतांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी दोनों के साथ इस मैत्रीपूर्ण सहयोग के बूते पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और क्वोमिनतांग के संयुक्त मोर्चे के गठन की पहल में मध्यस्थ का काम कर सकी।

32.2.1 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर संयुक्त मोर्चे के गठन को लेकर कुछ मतभेद थे। फिर भी विश्व राजनीति पर जोर देने की आवश्यकता को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वीकार किया। वास्तव में, चीन में कम्युनिस्ट आंदोलन का उदय राष्ट्रवाद के विकास और जनतंत्र के लिये चलाने वाले आंदोलन के संदर्भ में हुआ था। इसलिये, राष्ट्रीय मुक्ति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का एक प्राथमिक लक्ष्य था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं को यह एहसास हो गया था कि चीन को साम्राज्यवादी ताकतों के चंगुल से मुक्त कराये बिना न तो जनतंत्र आ सकता है और न ही जनता के जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, समय-समय पर इन ताकतों और सामंतों के बीच राजनीतिक समझौता भी रहा। इसलिये, राष्ट्रीय मुक्ति को चीन में सामाजिक मुक्ति के लिये चलने वाले संघर्ष से अलग नहीं किया जा सकता था।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने देखा कि क्वोमिनतांग साम्राज्यवाद और युद्ध सामंतवाद दोनों के विरुद्ध था। इसके नेताओं ने यह भी महसूस किया कि 1924 में चीन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की अपेक्षा क्वोमिनतांग कहीं अधिक मजबूत शक्ति थी। उसके पास:

- चीनी जनता का कहीं व्यापक आधार और समर्थन था,
- सदस्यों के रूप में कहीं अधिक बुद्धिजीवी और व्यावसायिक लोग थे,
- प्रशासन सेनाओं के भीतर कहीं अधिक प्रभाव था, और
- कहीं अधिक कोश और सैनिक साज-सामान था।

इसलिये, क्वोमिनतांग समान शत्रु, के विरुद्ध संघर्ष में एक उपयोगी मित्र हो सकता था। चाहे वह मजदूरों और किसानों की दैनिक मांगों का प्रतिनिधित्व न करता हो। इसके अतिरिक्त, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं की क्वोमिनतांग के नेता, सन यात सेन, के विषय में अच्छी राय थी। उनके सामने आसन्न राजनीतिक कामों के संदर्भ में, वे इस बात से सहमत थे कि मतभेद की अपेक्षा सहयोग के लिये कहीं अधिक संभावना थी। उन्होंने यह भी महसूस किया कि इस सहयोग का अर्थ आवश्यक रूप से यह नहीं था

कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी गतिविधियों को समान कामों तक ही सीमित रखे। इसलिये, उन्होंने इस स्पष्ट समझ के साथ संयुक्त मोर्चे के पक्ष में निर्णय लिया कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रीय मुक्ति के लिये और सामंतों के विरुद्ध क्वोमिनतांग के साथ मिल कर लड़ने के साथ-साथ स्वाधीन मांगों को बनाये रखेगी।

इस प्रकार, संयुक्त मोर्चा शत्रुओं को अलग-अलग करने के वास्ते चीनी जनता के व्यापकतम वर्ग को एकजुट करने का एक मात्र तरीका था।

32.2.2 क्वोमिनतांग

सन् 1911 की क्रांति के बाद के दशक में जो गणतंत्रवाद का प्रयोग हुआ उससे चीन में न तो आर्थिक स्थिरता ही आई और न ही राजनीतिक। गणतंत्रीय सरकार के राजनीतिक रूप से बेअसर होने के कारण सन यात सेन को साम्राज्यवादियों और युद्ध सामंतों से लड़ने के नये तरीके निकालने के बारे में सोचना पड़ा। वामपंथ और मज़दूर आंदोलन की उठती लहर ने राष्ट्रवादी मुक्ति के लिये होने वाले संघर्ष को नये मोड़ पर खड़ा कर दिया। उसका अर्थ यह होता था कि राष्ट्रवादी शक्तियों के सामाजिक आधार को और भी व्यापक करके उनमें चीन के मज़दूरों और किसानों को शामिल किया जा सकता था।

सन यात सेन की अपनी प्रभावकारिता, बढ़ते साम्यवादी आंदोलन और मज़दूर आंदोलन में उसके प्रभाव ने मिल कर सन यात सेन के सामने दो बातें स्पष्ट कर दीं:

1) यह अनिवार्य था कि क्वोमिनतांग को फिर से संगठित किया जाये।
2) साम्राज्यवादियों और युद्ध सामंतों से अकेले अपने दम पर और आगे लड़ना संभव नहीं था।

सन यात सेन को लगा कि इसका जवाब बस एक ऐसा पुनर्गठित क्वोमिनतांग था जिसमें चीनी जनता के सभी तबकों के समर्थन को लिया जाये। इसके लिये कम्युनिस्टों के साथ एक संयुक्त मोर्चा बनाना और सोवियत रूस की मित्रतापूर्ण सहायता लेना अनिवार्य था।

32.3 वार्ताएं

सन् 1921 के बसंत में उच्च अभिकर्ता एच मैरिंग, ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के प्रतिनिधि के रूप में सन यात सेन से मुलाकात की। यह संयुक्त मोर्चे के लिये होने वाली वार्ताओं की शुरुआत साबित हुई। उसके बाद, इस मसले पर जनवरी 1922 में मास्को में हुए कम्युनिस्ट पार्टियों के एक सम्मेलन में, और उसके बाद अगस्त 1922 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति में विचार किया गया। उसी महीने में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का एक और प्रतिनिधि, एडोल्फ जौफ, सोवियत-क्वोमिनतांग-चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग का आधार तैयार करने के लिये चीन आया। लंबी बातचीत के बाद, एडोल्फ जौफ, ने सन यात सेन को इस बात के लिये तैयार कर लिया कि वह सोवियत रूस के साथ गठबंधन और क्वोमिनतांग में साम्यवादियों के प्रवेश की नीति को अपनाये। इस नीति का अनुमोदन 53 राष्ट्रवादी नेताओं ने 4 सितम्बर, 1922 को शंघाई में हुए एक सम्मेलन में किया। यह नीति संयुक्त मोर्चे की नीति के लिये, और क्वोमिनतांग के पुनर्गठन के लिये भी, आदर्श बन गयी। दूसरी ओर जून 1923 में कैंटन में आयोजित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में क्वोमिनतांग के साथ एक संयुक्त मोर्चा बनाने के बारे में औपचारिक निर्णय ले लिया गया।

जून 1924 में, क्वोमिनतांग ने कैंटन में अपना पहला राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। ली ता-चाओ, माओ त्से-तुंग और अन्य साम्यवादी नेताओं ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को उनकी व्यक्तिगत हैसियत में क्वोमिनतांग में प्रवेश दिया जाये। इसमें एक नये पार्टी कार्यक्रम और संविधान को अपनाया गया। इसमें क्वोमिनतांग के पुनर्गठन से संबंधित कुछ ठोस उपायों पर भी निर्णय लिया गया। क्वोमिनतांग के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन के घोषणापत्र को भी नहीं अपनाया गया। सन यात सेन ने घोषणापत्र में अपने तीन सिद्धांतों की एक नयी व्याख्या प्रस्तुत की। सम्मेलन ने अपने तीन सिद्धांत इस प्रकार रखे:

- सोवियत संघ के साथ मित्रतापूर्ण संबंध,
- चीन में मज़दूर और किसान आंदोलनों का विकास, और

- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग।

इस तरह, राष्ट्रीय मुक्ति और जनतंत्र के लिये संयुक्त मोर्चा 1924 में क्वोमिनतांग के इस पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में अस्तित्व में आया। मैटिंग ने 1921 से लेकर 1924 तक की तमाम वार्ताओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

32.4 संयुक्त मोर्चे की प्रकृति

संयुक्त मोर्चे की नीति की पहली और सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी क्वोमिनतांग का एक ऐसे क्रांतिकारी संगठन के रूप में उदय जो चीन में राष्ट्रीय मुक्ति के पक्ष में और युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व करने में सक्षम था। क्वोमिनतांग में साम्यवादियों के प्रवेश का अर्थ यह होता था कि असंख्य अति समर्पित क्रांतिकारियों की क्षमताओं और अनुभव को राष्ट्रवादी संघर्ष में जोत लिया गया था। क्वोमिनतांग की स्थायी समिति (प्रिसिडियम) के लिये चुने गये पांच सदस्यों में एक साम्यवादी, ली ता-चाओ, भी था। केंद्रीय समिति के लिये चुने गये 24 सदस्यों में पांच वामपंथी थे और तीन कम्युनिस्ट। बहुमत में न होते हुए भी, वामपंथी और साम्यवादी नीतिगत निर्णय लेने के संदर्भ में कहीं अधिक प्रभावशाली थे। इसके परिणामस्वरूप क्वोमिनतांग के भीतर एक मजबूत वामपंथ का उदय हुआ। अर्थात् अपने समूचे रूप में क्वोमिनतांग अपनी नीतियों और मज़दूर और किसान आंदोलन को समर्थन देने में इतना अधिक क्रांतिकारी हो गया जितना वह 1924 से पहले के वर्षों में कभी नहीं रहा था।

तीन सिद्धांतों को जो नयी व्याख्या दी गयी उससे भी यही संकेत मिलता है।

i) राष्ट्रवाद में साम्राज्यवाद विरोधी तत्व अब और भी मजबूत हो गया जिसमें एक स्वाधीन संघर्ष पर जोर दिया गया और चीन के भीतर तमाम राष्ट्रवादियों के लिये पूरी समानता की वकालत की गयी।
ii) जनतंत्र के नये सिद्धांत में इस बात पर जोर दिया गया कि न केवल विशषाधिकार प्राप्त और शिक्षित व्यक्तियों को, बल्कि तमाम कामगारों का और सामंतवाद और साम्राज्यवाद का विरोध करने वाले तमाम व्यक्तियों और संगठनों को भी, जनतांत्रिक अधिकार दिये जायें। व्यवहार में, इसमें भाषण की स्वतंत्रता का अधिकार और बेहतर जीवन के लिये संगठन और संघर्ष करने का अधिकार आते थे।
iii) सभी के लिये आजीविका के संबंध में, इसमें भूमिस्वामित्व के समानीकरण, खेतिहरों को भूमि, पूंजी का नियंत्रण, और मज़दूरों के रहन-सहन की स्थितियों में सुधार जैसी सामंत-विरोधी मांगें शामिल थीं। व्यवहार में, इसका अर्थ होता था चंद पूंजीवादियों और जमींदारों के हाथों में राष्ट्रीय संपदा के नियंत्रण का विरोध करना।

क्वोमिनतांग के नेतृत्व वाले संयुक्त मोर्चे ने एक जनतांत्रिक संयुक्त सरकार की स्थापना की दिशा में काम करने के लिये राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग और मज़दूरों और किसानों के गठबंधन की मांग की। यह वास्तव में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में रेखांकित आसन्न कामों को पूरा करने की दिशा में उठाया गया कदम ही था। इसका अर्थ यह भी होता था कि चीन के किसी भी राजनीतिक गुट द्वारा प्रस्तुत इस सबसे क्रांतिकारी कार्यक्रम को संयुक्त मोर्चे की नीतियों के ढांचे के भीतर कार्यान्वित किया जा रहा था।

बोध प्रश्न 1

1) संयुक्त मोर्चे के गठन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के क्या उद्देश्य थे? लगभग दस पंक्तियों में उत्तर दीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) संयुक्त मोर्चा किस वर्ष अस्तित्व में आया?
   क) 1922
   ख) 1924
   ग) 1923
   घ) 1926

3) लगभग दस पंक्तियों में संयुक्त मोर्चे की प्रकृति की विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

32.5 उपलब्धियां और सफलताएं

संयुक्त मोर्चा नीति की पहली सफलता तो उसी समय सामने आ गयी थी जब बातचीत अभी चल रही थी। सनयात सेन ने कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थन से मार्च 1923 में क्वीनतुंग में एक क्रांतिकारी सरकार का गठन किया। सोवियतों ने क्वोमिनतांग को फिर से संगठित करने में मदद देने के लिए माइकेल बोरोदिन को और सेना के प्रशिक्षण में मदद के लिए जनरल गालेन को भेजा, उनके साथ 40 अन्य सलाहकार भी आये। अगस्त 1923 में, एक युवा जनरल, च्यांग काई शेक, को सोवियत सैनिक प्रणाली का अध्ययन करने के लिये सोवियत संघ भेजा गया। सोवियतों की मदद से, सन यात सेन को कैंटन के निकट वाम्पो सैनिक अकादमी स्थापित करने में भी सफलता मिली। राष्ट्रवादी सेना का गठन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, क्योंकि इससे कुछ युद्ध सामंतों की सेनाओं के विरुद्ध पहली महत्वपूर्ण जीत हासिल हो सकी। कैंटन अड्डे पर कब्जे का काम 1925 तक पूरा हो गया। राष्ट्रवादी सरकार को अक्तूबर 1926 में वूहान ले जाया गया और क्वोमिनतांग के सैनिकों ने चीन के एकीकरण के लिये एक सैनिक अभियान शुरू कर दिया। इसे उत्तरी अभियान के नाम से जाना गया। कुछ ही समय में क्वोमिनतांग ने आधे चीन पर नियंत्रण कर लिया। इसके परिणामस्वरूप क्रांतिकारी सेनाओं के नियंत्रण के क्षेत्र में संयुक्त मोर्चे के दौर में तेजी से विस्तार हुआ, दोनों पार्टियां भी साम्राज्यवाद – विशेषकर जापान और इंग्लैंड के साम्राज्यवाद का मिल जुल कर कड़ा प्रतिरोध करने में समर्थ रही।

संयुक्त मोर्चे की एक और महत्वपूर्ण विशेषता थी 1925-26 के दौरान जनप्रिय आंदोलनों के विकास को बढ़ावा देने में उसकी निर्णायक भूमिका, 1925 के 13 मई के आंदोलन ने विशेषकर पूरे चीन में अनेक हड़तालों, बहिष्कारों और साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शनों को जन्म दिया। इसे शंघाई की अंतर्राष्ट्रीय बस्ती की

एक प्रमुख भूमिका निभायी। कुछ विद्वानों के अनुसार, इस आंदोलन ने चीनी राजनीतिक जीवन में इतना आमूल परिवर्तन कर दिया कि इसे एक सच्चे क्रांतिकार दौर की शुरुआत करने वाला कहा जा सकता है। अंग्रेजी व्यापार इस आंदोलन के दौरान मज़दूर वर्ग के कार्यों के कारण ठप्प पड़ गया। इस क्षेत्र पर नियंत्रण रखने वाले क्वोमिनतांग ने हड़ताली मज़दूरों का समर्थन किया और उनके लिये धन की व्यवस्था की। धाम संधों, शंघाई वाणिज्य मंडल और (लघु व्यापार के प्रतिनिधि) नुक्कड़ व्यापारियों के संघों और शंघाई के महासंघ ने साम्यवादियों के इस आह्वान का जवाब दिया कि वे विरोध जताने के लिये खुल कर सामने आ जायें। इस व्यापक विविधता में सयुंक्त मोर्चे की राजनीतिक प्रकृति और संयुक्त मोर्चे की सफलता परिलक्षित हुई। आंदोलन का समर्थन करने वाले सौदागरों और व्यापारियों को विदेशी कारखानों में काम बंद हो जाने से आर्थिक लाभ हुआ क्योंकि इन कारखानों से उनकी होड़ थी। शंघाई के अलावा, युद्ध सामंतों के नियंत्रण वाले तमाम क्षेत्रों में एकजुटता की हड़तालें हुईं : विदेशी कंपनियों पर धावे बोले गये, विदेशी सामान का बहिष्कार किया गया, और राजनीतिक आंदोलन हुए। चीनी जनता के विभिन्न तबकों की एकता इन क्षेत्रों में उसी तरह व्यक्त हुई जिस तरह से शंघाई में हुई थी।

32.6 जन आंदोलन और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

क्रांतिकारी आंदोलन के विकास ने मज़दूरों में जागृति को भी जन्म दिया। कैंटन की नयी सरकार ने आधिकारिक तौर पर मज़दूरों के संघर्ष का समर्थन किया। अनेक नये मज़दूर संघ अस्तित्व में आये; बड़े शहरों में जन आंदोलन हुए; राजनीतिक मांगें आम हो गयी; किसान संघों की संख्या भी बढ़ी — ऐसा विशेषकर हुनान, पुर्वी क्वानतुंग और पश्चिमी क्यांगसी में कैंटन सरकार के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में हुआ। लगान कम कराने के लिये संपत्ति स्वामियों के विरुद्ध एक आर्थिक संघर्ष छेड़ने के अलावा, किसानों ने अनाज के वितरण पर नियंत्रण का दावा भी पेश किया, कर देने से इंकार कर दिया और जमींदारों की सामाजिक और राजनीतिक सत्ता को भी चुनौती दी। सशस्त्र सेनाओं का गठन भी किया गया। क्वोमिनतांग ने एक किसान आंदोलन प्रशिक्षण संस्थान का प्रयोजन किया जहां माओ त्से-तुंग शिक्षक था। किसान आंदोलन के 1926 में आयोजित पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में दस लाख से भी अधिक सदस्यों का प्रतिनिधित्व हुआ। युद्ध सामंतों के गढ़, उत्तर, में भी किसान आंदोलन की प्रगति देखने में आयी। जून 1927 तक पूरे देश में कुल मिलाकर किसान संघों के लगभग 9,150,000 सदस्य थे।

इन जनप्रिय आंदोलनों को आयोजित करने में क्योंकि कम्युनिस्ट ही सबसे अधिक सक्रिय थे इसलिए 1921-27 के बीच के दौर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य संख्या और उसकी राजनीतिक शक्ति में भी जबरदस्त वृद्धि देखने में आयी। 1925 के 13 मई के आंदोलन के परिणामस्वरूप उसकी सदस्य संख्या छह महीनों में दस गुनी बढ़ गयी। नवम्बर 1925 में यह संख्या 10,000 हो गयी, जबकि उस वर्ष के प्रारंभिक महीनों में यह केवल 1,000 थी, जुलाई 1926 तक सदस्य संख्या बढ़ कर 30,000 हो गयी और 1927 के प्रारंभिक महीनों में यह 58,000 हो गयी। युवा कम्युनिस्ट लीग का गठन भी बदल गया। 1925 से पहले, 90 प्रतिशत सदस्य छात्र हुआ करते थे, लेकिन नवम्बर 1926 तक केवल 35 प्रतिशत छात्र रह गये।

अधिक संख्या मज़दूरों की हो गयी। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की जनता को लामबंद करने की क्षमता में भी जबरदस्त वृद्धि हुई, जब च्यांग काई शेक की क्रांतिकारी सेना ने अपना अभियान छेड़ा तो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने ही उस सैनिक अभियान को एक ठोस जनाधार और राजनीतिक शक्ति देने के लिये 1,200,000 मज़दूरों और 800,000 किसानों को संगठित किया।

सोवियत लाल सेना के स्वरूप पर, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने क्रांतिकारी सेना में राजनीतिक कार्य की व्यवस्था लागू की, इस अभियान की अंततः सफलता में यह एक महत्वपूर्ण कारक था। क्रांतिकारी सेना अपने उत्तरी अभियान में जहां-जहां से निकली, उसे मज़दूरों और किसानों का सक्रिय समर्थन मिला। जब सेना ने कूच किया तो कैंटन-मेंगकांग हड़ताल में हिस्सा ले चुके मज़दूरों ने परिवहन, प्रचार और चिकित्सा एककों का आयोजन किया, हज़ारों लोगों ने सेना के साथ प्रयाण भी किया। हुनान और हुपे में भी मज़दूरों और किसानों ने इन प्रांतों पर कब्ज़े को संभव करने में काफी साथ दिया।

संयुक्त मोर्चे के दौरान क्रांतिकारी विकास अपने शीर्ष पर शंघाई के साहसिक मज़दूर विद्रोह में पहुंचा। मज़दूर विद्रोहों की शृंखला में यह तीसरा विद्रोह था जिसकी शुरुआत 21 मार्च 1927 को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एक आम हड़ताल के आह्वान के साथ हुई। अगले दिन तक शहर क्रांतिकारियों के हाथों में था; और यह काम जनरल च्यांग काई शेक की सेना के शहर में घुसने या एक भी गोली चलने से पहले हो चुका था।

मज़दूरों ने रेलगाड़ियों को रोक दिया था, पानी और बिजली की आपूर्ति काट दी थी, पुलिस मुख्यालय, दूरभाष और तारघर पर कब्जा कर लिया था। समूचे मज़दूर वर्ग के समर्थन के बूते पर चीन के सबसे बड़े व्यापारिक और आद्यौगिक शहर को ठप्प कर दिया गया था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने शंघाई के नागरिकों की एक विशाल रैली आयोजित की और शंघाई जनता की सरकार का निर्वाचन किया। अंततः, 24 मार्च, 1927 को नानकिंग को मुक्त करा लिया गया।

32.7 विघटन और दमन

संयुक्त मोर्चे के ढांचे के भीतर क्रांतिकारी आंदोलन के इस शीर्ष के परिणामस्वरूप 24 मार्च, 1927 को खुद मोर्चे का ही विघटन हो गया, इंगलैंड, अमेरिका, जापान और फ्रांस के युद्धपोतों ने नानकिंग पर बमबारी करके 2,000 सिपाहियों और नागरिकों को या तो मार दिया या घायल कर दिया। यह घटना चीनी क्रांति को कुचलने के लिए साम्राज्यवादी देशों के व्यापक स्तर के और संकल्पित हस्तक्षेप की शुरुआत की द्योतक थी।

दूसरी ओर, इस जनप्रिय आंदोलन के आगे बढ़ने के साथ-साथ, एक दक्षिणपंथी, प्रतिक्रियावादी शाखा भी क्वोमिनतांग के भीतर उभर आयी थी जो इन आंदोलनों के विरुद्ध थी। सन यात सेन की 1925 में मृत्यु हो चुकी थी, उसकी मृत्यु के बाद च्यांग काई शेक क्वोमिनतांग के सबसे महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरा। च्यांग काई शेक सेना का प्रधान सेनापति भी था, इसलिये उसकी राजनीतिक स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और जनप्रिय आंदोलनों के विरोधियों का साथ देने का निर्णय लिया और दक्षिणपंथी शाखा का नेतृत्व संभाल लिया। 12 अप्रैल 1927 को उसने शंघाई के मज़दूर संघों पर अचानक हमला करवा दिया। मज़दूरों के हथियार जब्त कर लिये गये और हज़ारों की संख्या में उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बाद दूसरे क्षेत्रों में भी उसी प्रकार की पाशविक घटनाएं हुईं। हड़तालों पर पाबंदी लगा दी गयी, किसान संघों को समाप्त कर दिया गया, साम्यवादियों की धर-पकड़ शुरू हो गयी, पीकिंग स्थित सोवियत दूतावास पर हमला किया गया और सोवियत सलाहकारों को निकाल बाहर किया गया। 15 जुलाई, 1927 को, क्वोमिततांग ने क्वोमिनतांग से साम्यवादियों के औपचारिक निष्कासन की घोषणा कर दी। साम्यवादियों को पाशविक बल के आगे बाध्य होकर भूमिगत होना पड़ा। निहत्थी क्रांतिकारी सेनाएं इस मार-काट का जवाब नहीं दे पायीं। एक बार फिर साम्राज्यवादी शक्तियों और चीन के सामंती और पूंजीवादी तबकों के बीच एक राजनीतिक और आर्थिक सांठगांठ कायम हो गयी। क्वोमिनतांग के भीतर इस सांठगांठ की प्रतीक "दक्षिणपंथी शाखा" चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के लिये बहुत अधिक शक्तिशाली साबित हुई।

32.8 विघटन के कारण

संयुक्त मोर्चे के टूटने और इस चरण पर क्रांतिकारी सेनाओं के पराजित होने के कारण संयुक्त मोर्चे के अपने अनुभवों और उसके भीतर चलने वाली होड़ में निहित थे, संयुक्त मोर्चे की एक धारा का प्रतिनिधित्व करने वाले क्वोमिनतांग के सदस्यों में केवल छोटे बूर्जुआ (निम्न मध्यम और मध्यम वर्ग) ही नहीं बल्कि जमींदार, शहरी सौदागर और वित्तदाता वर्ग के लोग भी शामिल थे जो क्रांतिकारी सेनाओं के बनाये क्रांतिकारी कार्यक्रम के विरुद्ध थे क्योंकि इस कार्यक्रम का अर्थ होता था विद्यमान सामाजिक व्यवस्था में बदलाव। वास्तव में, संयुक्त मोर्चे की आर्थिक सफलता से उन हताश तत्वों के छिपे विरोध सामने आ गये जिन्हें राष्ट्रीय एकीकरण के कार्यक्रम ने अस्थायी तौर पर एक कर रखा था।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि संयुक्त मोर्चा कोई स्थिर गठबंधन नहीं था। इसके अलग-अलग घटक युद्ध सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध एकजुट होते हुए भी सामाजिक मुद्दों पर अलग-अलग दृष्टिकोण रखते थे। इससे पहले संयुक्त मोर्चे में वामपंथी और साम्यवादी घटक मजबूत और विकासशील थे, लेकिन वे इतने मजबूत नहीं थे कि किसी आमूल सामाजिक बदलाव को सुनिश्चित कर सकते। जमीदारों और उद्योगपतियों के लिये मज़दूर और किसान साम्राज्यवादियों से उनको कम से कम अपने विशेषाधिकारों के लिये तो कोई खतरा नहीं था। इसलिये, जब मज़दूरों और किसानों के आंदोलनों ने जोर पकड़ा तो, उसी अनुपात में चीन के विशेषाधिकार प्राप्त तबकों का प्रतिनिधित्व करने वाली दक्षिणपंथी शाखा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और मज़दूरों और किसानों के विरोध में साम्राज्यवादियों और युद्ध सामंतों के शिकंजे में आ गयी।

क्रांतिकारी आंदोलन के मुख्य आधार, बड़े शहर, अद्यमान संधियों की व्यवस्था के भी मुख्य आधार थे, क्रांति का विरोध भी शहरों में बहुत तगड़ा था। च्यांग काई शेक को समर्थन देने वाली सशस्त्र सेनाओं और सामाजिक सेनाओं का भी जमाव यहीं था। मज़दूरों की हड़तालों की सफलता ने ही चीनी बूर्जुआ वर्ग को अपने 1924 के गठबंधन की उपादेयता पर संदेह प्रकट करने को बाध्य कर दिया। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि 1924 के कार्यक्रम के पीछे चलने वाले राष्ट्रवादी आंदोलन ने उन सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के स्तंभों पर खुल कर प्रहार किया जिन पर विदेशी प्रभुत्व टिका हुआ था।

विघटन का कारण बनने वाला एक निर्णायक मुद्दा कृषि का मसला भी था, सामंतवाद के विरुद्ध ग्रामीण अंचलों में होने वाला संघर्ष एक कटु वर्ग संघर्ष था। जमीदारों ने किसान आंदोलन पर प्रहार करने में कोई देरी नहीं की और क्वोमिनतांग की अफसर कोर के वे तबके भी जल्दी ही उनके साथ हो लिये जो उसी सामाजिक वर्ग से थे, वे कृषि सुधारों के विरोध में खुल कर सामने आ गये। मज़दूरों और किसानों के विरोध करने या संघ बनाने के अधिकारों पर पाबंदी लगाने के लिये कानून लागू कर दिये। क्वोमिनतांग भी अब राजनीतिक जनतंत्र की पोषक नहीं रह गयी। कामगारों के आंदोलनों की संभावी शक्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ अपने संबंधों का इस्तेमाल करके, क्वोमिनतांग अब राजनीतिक दृष्टि से एक मजबूत स्थिति में था। उसके नियंत्रण में अच्छा खासा क्षेत्र था और सामंतों से मुक्त पश्चिमी ताकतों के साथ उसके संबंध भी थे। उसे लगा कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी मज़दूरों और किसानों के बिना भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता था। क्वोमिनतांग भविष्य के घटनाक्रम को जो दिशा देना चाहता था उसमें सामाजिक व्यवस्था को बदलना शामिल नहीं था।

क्वोमिनतांग के हाथों जनतांत्रिक शक्तियों पर प्रहार के साथ ही पहले संयुक्त मोर्चे का अंत हो गया। चीनी क्रांति को तो एक जबरदस्त धक्का लगा, लेकिन संघर्ष का यह अनुभव कीमती रहा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को कई राजनीतिक सबक सीखने को मिले। असफलता के कारणों पर व्यापंक बहस हुई और उनका विश्लेषण भी किया गया। सच में तो खुद असफलता ने ही क्रांतिकारी शक्तियों के पुनर्गठन और क्रांति के लिये एक नयी नीति के निर्माण की प्रक्रिया को गति दी।

बोध प्रश्न 2

1) लगभग 10 पंक्तियों में "संयुक्त मोर्चे" की उपलब्धियों की विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) संयुक्त मोर्चे का विघटन किस वर्ष हुआ?
   क) 1925
   ख) 1926
   ग) 1927
   घ) 1928
3) लगभग 10 पंक्तियों में संयुक्त मोर्चे की विफलता के कारणों का विवेचन कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

32.9 सारांश

संयुक्त मोर्चे का एक सामाजिक शक्ति के रूप में उदय उसके घटकों की रणनीति अधिक थी, वैचारिक गठबंधन कम। मज़दूर आंदोलन और बूर्जुआ वर्ग के बीच क्वोमिनतांग की पहल पर होने वाले संयुक्त प्रयासों का ध्येय एक ही था — और वह था युद्ध सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करना। इस तरह, संयुक्त मोर्चा साम्राज्यवादी शक्तियों और युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध, साम्राज्यवादियों और राष्ट्रवादियों का एक गठबंधन था।

राष्ट्रीय मुक्ति और एक जनतांत्रिक राज्यतंत्र की स्थापना इस संयुक्त रणनीति के महत्वपूर्ण तत्व थे, इस संयुक्त मोर्चे ने शुरुआत में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और क्वोमिनतांग दोनों गुटों के हितों को साधा। लेकिन, आगे चल कर चीन में अनेक और भी बड़े जनप्रिय आंदोलनों के विकास ने वास्तव में इस मोर्चे की बुनियाद को ही हिला कर रख दिया और इसके पीछे के समान उद्देश्य को भंग कर दिया। 1925-26 के बीच उठने वाले जनप्रिय आंदोलन कैंटन में क्रांतिकारी आधार की मजबूती से जुड़ गये और दक्षिणी सेनाओं ने युद्ध सामंतों के विरुद्ध जो विरोधात्मक रवैया दिखाया उससे इस गठबंधन के सांगठनिक ढाँचे का संकट और भी गहरा हो गया। क्रांतिकारी लहर की जीत ने दक्षिणपंथी शाखा की शक्तियों में असंतोष भर दिया। इस तरह, भीतर एक विघटन हुआ जो बाहर 1927 में वूहान सरकार के पतन के रूप में सामने आया, वास्तव में यह संयुक्त मोर्चे के पूरे सांगठनिक ढांचे के लिये ही घातक साबित हुआ। क्वोमिनतांग ने मज़दूरों, किसानों और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति एक दमनकारी नीति अपनायी।

32.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इस चरण में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय मुक्ति था, कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रवाद के विकास के साथ और भी मजबूत हो कर उभरी। वे एक जनतांत्रिक आंदोलन के पोषक थे। देखिये उपभाग 32.2.1
2) ख

3) संयुक्त मोर्चे का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था युद्ध सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरोधी एक क्रांतिकारी संगठन के रूप में क्वोमिनतांग का उदय। पांच सदस्य प्रधान परिषद् के लिये चुने गयें और 24 का निर्वाचन केंद्रीय समिति के लिये हुआ। देखिये भाग 32.4

बोध प्रश्न 2

1) साम्राज्यवादी शक्तियों और युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध संयुक्त मोर्चे के संघर्ष को अत्यधिक सफलता मिली। चीन में राष्ट्रवादी सेना का गठन एक अच्छी-खासी उपलब्धि थी क्योंकि इसने युद्ध सामंती शक्तियों से लड़ने में मदद की। देखिये भाग 32.5.
2) ग
3) कटु अनुभव और राजनीतिक दबाव ने संयुक्त मोर्चे की विफलता के लिये पर्याप्त कारण जुटा दिये। संगठन की एक धारा ने संयुक्त मोर्चे के क्रांतिकारी कार्यक्रमों के प्रति अपनी असंतुष्टि प्रदर्शित की। देखिये भाग 32.8